श्रीश्रीगुरुगौराङ्गौ जयतः ।

ॐ विष्णुपाद-श्रील-भक्तिरक्षक-श्रीधर-देवगोस्वामि-विरचितम्

श्रीश्रीप्रेम-धाम-देव-स्तोत्रम्

(हिंदी मर्मानुवाद सहित)

श्रीचैतन्य-सारस्वत मठ, नवद्वीप

श्रीश्रीगुरुगौराङ्गौ जयतः ।

श्रीश्रीप्रेम-धाम-देव-स्तोत्रम्

रचयिता

वैष्णव-सिद्धान्ताचार्यसम्राट् जगद्गुरु

प्रभुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी

महाराज के प्रियतम पार्षद तथा

नवद्वीप श्रीचैतन्य-सारस्वत मठ के

प्रतिष्ठाता-सभापति-आचार्य अनन्तश्रीविभूषित

ॐ विष्णुपाद परमहंसकुलमुकुटमणि जगद्गुरु

श्रीश्रीमद्भक्तिरक्षक श्रीधर देवगोस्वामी महाराज

हिंदी मर्मानुवाद सहित वर्तमान संस्करण के संपादक

उनके प्रियतम पार्षद जो उनके द्वारा मनोनीत और स्थलाभिषिक्त हैं

सेवाइत-सभापति-आचार्य ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री

श्रीमद्भक्तिसुन्दर गोविन्द देवगोस्वामी महाराज

नवद्वीप श्रीचैतन्य-सारस्वत मठ

से प्रकाशित है

नवद्वीप श्रीचैतन्य-सारस्वत मठ और अंतर्राष्ट्रीय शाखाओं
के वर्तमान सेवाइत-सभापति-आचार्यदेव
ॐ विष्णुपाद श्रील भक्तिसुन्दर गोविन्द देवगोस्वामी महाराज
की प्रेरणा और कृपादेश द्वारा—

प्रकाशक/अनुवादक/मुद्रण-अध्यक्ष—
त्रिदण्डी स्वामी श्रीभक्ति आनन्द सागर महाराज
अनुवादन सहायता—
श्रीमती वसंतेश्वरी देवी दासी (हिंदी, एम० ए०)
श्रीसुनीलकृष्ण दासाधिकारी
आर्थिक सेवा—
श्रीपरमपद दासाधिकारी

आचार्यदेव श्रील गोविन्द महाराज द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित हैं

द्वितीय हिंदी संस्करण— २५,००० कोपियाँ
श्रीगौराविर्भाव तिथि ई १३ मार्च, १९९८

Printed by SNP Printing Pte Ltd

श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः

उत्सर्ग-पत्रम्

श्रीमदजितकृष्णाख्यो ब्रह्मचारी च दासकः ।
पूर्व्वं श्रीमदधीराख्यो मजुंदार इतीरितः ॥१॥

उत्सर्गीकृतसर्व्वस्वो गुरुकृष्ण-पदाम्बुजे ।
मनो-धन-तनु-श्रद्धा-गुरुसेवा-सदाव्रतः ॥२॥

रसाद्रि-वेद-गौराब्दे शुक्लाषाढाष्टमी-तिथौ ।
प्राप्तो धामरजोऽचिन्त्यं सेवार्त्तिः सेवकोत्तमः ॥३॥

पूत-सेवा-स्मृतेस्तस्य श्रीसेवा-सौरभ-प्रभोः ।
संरक्षणे कृतोत्साहैर्विश्वश्रेष्ठ-हिताय च ॥४॥

गौर-गाथामय-ग्रन्थः प्रेमधामस्तवाख्यकः ।
प्रकाशितोऽत्र चैतन्य-सारस्वत-मठाश्रितैः ॥५॥

श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः

परलोक-गत परम भक्त

माननीय धनपत राय कर्णानीजी

के शुभ स्मरण में

उनके पुत्र-पौत्र-परिवार के द्वारा

१०,००० कोपियाँ दान दी गई हैं

श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः

अंतर्दर्शन

''श्रीश्रीप्रेमधाम-देव-स्तोत्रम्'' का यह द्वितीय हिन्दी अनुवाद सहित ग्रन्थ प्रकाशन है। इस से पहले इसके कुछ संस्करण क्रमानुसार रूप में पारमार्थिक पत्रिका 'श्रीगौड़ीय-दर्शन' में प्रकाशित हुए, और पूर्ण रूप में बागांली मर्मानुवाद सहित दो बार प्रकाशित हुए।

स्तोत्र के लेखक विश्ववरेण्य आचार्य भगवान् श्रीश्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर के परमाणुग पार्षदप्रवर रूप में प्रकटित हमारे श्रीगुरुपादपद्म ॐ विष्णुपाद परिव्राजकाचार्यवर्य अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिरक्षक श्रीधर देवगोस्वामी महाराज हैं। उनके संस्कृत भाषा में रचित ''श्रीश्रीप्रपन्न-जीवनामृतम्'' ग्रन्थराज और विविध छन्द में रचित स्तवरत्न सुधीजन के द्वारा समादृत और श्रीसारस्वत गौड़ीय वैष्णवों के कण्ठहार रूप से विराजित है। उनके लिखित श्रीश्रीमद्भगवद्गीता की मौलिक व्याख्या भी श्रीगौड़ीय-सम्प्रदाय का एक महामूल्य संपद है।

वर्त्तमान स्तोत्र 'तूणक' छन्द में विरचित है। उक्त छन्द में श्रील रूप गोस्वामी ने श्रीयमुनादेवी की महिमा और श्रील कृष्णदास कविराज ने श्रीराधिका और श्रीकृष्ण के सुमधुर स्तव की रचना की है।

श्रीचैतन्य महाप्रभु के इस स्तोत्र का वैशिष्ट्य है कि, इसमें उनकी समग्र लीला और 'अचिन्त्य-भेदाभेद-सिद्धान्त' संक्षिप्त रूप में सन्निविष्ट है। इसमें काव्य और दर्शन एकत्र होकर माधुर्य और गाम्भीर्य के अपूर्व समन्वय साधित है। विद्वान् मण्डली यह स्तोत्र को श्रीमद्भागवत और श्रीचैतन्य-चरितामृत की तरह मानते हैं।

नवद्वीप में श्रीमन्महाप्रभु ने हरिनाम प्रचार करके, कठिन स्फोटवाद के शब्दार्थ-विचार का मौलिक दिग्दर्शन किया। वेदान्त-विचार-रत वाराणसी के विद्वानों को महाप्रभु ने दिखाया कि श्रीमद्भागवत ही वेदान्त-भाष्य है। भागवत के मूल चतुःश्लोक की व्याख्या करके अद्वयतत्त्व का स्वरूप सिद्ध किया। वही तत्त्व के मौलिक आनन्दमय और विलासमय गुण बताये। उसी का स्वरूप विग्रह नन्दकिशोर हैं और परम पुरुष रसराज गोपीजनवल्लभ हैं जो नित्य रासलीला के विलासी हैं।

मूल रूप में स्वभजन-विभजन-प्रयोजनावतारी अद्वयानन्द स्वरूप नृत्यकीर्तन-तनु श्रीगौरांग महाप्रभु ही हैं। यही समस्त अतिसूक्ष्म तत्त्व-सिद्धान्त समूह को भी अति सुन्दर सुयुक्ति से प्रदर्शित करके साथ साथ मायावाद के अद्वैत विचार को असार और तुच्छ दिखाया। अचिन्त्य-भेदाभेद-सिद्धान्त अवलंबन करके भगवत्प्रेममय जीवन ही सर्वोत्तम है यह दिग्दर्शन से सुधीजन और सुमेधगण निःसंदेह विस्मित और परितृप्त हो जायेंगे।

इस सिद्धान्त-विचार के विषय में श्रीचैतन्य-चरितामृत के इस निगूढ़ार्थक पद्य की उद्धृति रोक नहीं सकता हुँ।

'कृष्णलीलामृतसार तार शत शत धार।
दशदिक वहे याहा हइते।
से चैतन्य-लीला हय सरोवर अक्षय।
मनोहंस चराह ताहाते॥'

स्तोत्र के रसमाधुर्य से कविजनों का चित्त समान भाव से समाकृष्ट है। इसके पाठ और श्रवण के आनंद से विवश हृदय पिघल जाता है और सुखास्वादन होता है। श्रीमन्महाप्रभु के आविर्भाव, रूप के वर्णन, बाल्यलीला, कीर्तन प्रचार, संन्यासलीला, दाक्षिणात्य-

भ्रमणलीला, रामानन्द-संवाद, झाड़खण्डपथ पर श्रीवृन्दावन यात्रा, अपूर्व व्रजभ्रमण-लीला, श्रीनीलाचल में दिव्योन्माद, सागर किनारे की लीला इत्यादि वर्णन, सभी से—हृदय और कर्ण में कैसा अमृत-महोत्सव हो रहा है। यह सुधी पाठक को श्रीरूप और श्रीरघुनाथ के परमाणुगचरित श्रीचैतन्यचरितामृत के लेखक के अमृत-प्रवाह में मुहुर्मुहुः स्नान कराके धन्य करता है। ऐसे सुललित छन्द में श्रीमन्महाप्रभु के संक्षिप्त समग्र लीलासुधा के साथ प्रभु के दिये हुए सिद्धान्त प्रकाश के अपूर्व समन्वय से प्रकटित सुदीर्घ स्तोत्ररत्न जगत में अतिदुर्लभ है। यह सत्य है कि यह स्तोत्र श्रीचैतन्य-सारस्वत-गौड़ीय-साहित्य-भांडार का एक अमूल्य रत्न है।

सुविधा के लिए यह स्तोत्र छोटे और सुमधुर रूप में प्रकाशित किया गया है। अंत में, सुधी पाठकों को मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि श्रद्धापूर्ण भाव से वे इस स्तोत्र का उपयुक्त अनुशीलन करें और इस दीनाधम को श्रीश्रीगुरु-गौरांग के कृपादृष्टि-पात्र करके धन्य करें। अलमति विस्तरेण।

विनीत—

संपादक

ॐ विष्णुपाद श्रीश्रील भक्तिसुन्दर गोविन्द देवगोस्वामी महाराज

ॐ विष्णुपाद श्रीश्रील भक्तिरक्षक श्रीधर देवगोस्वामी महाराज

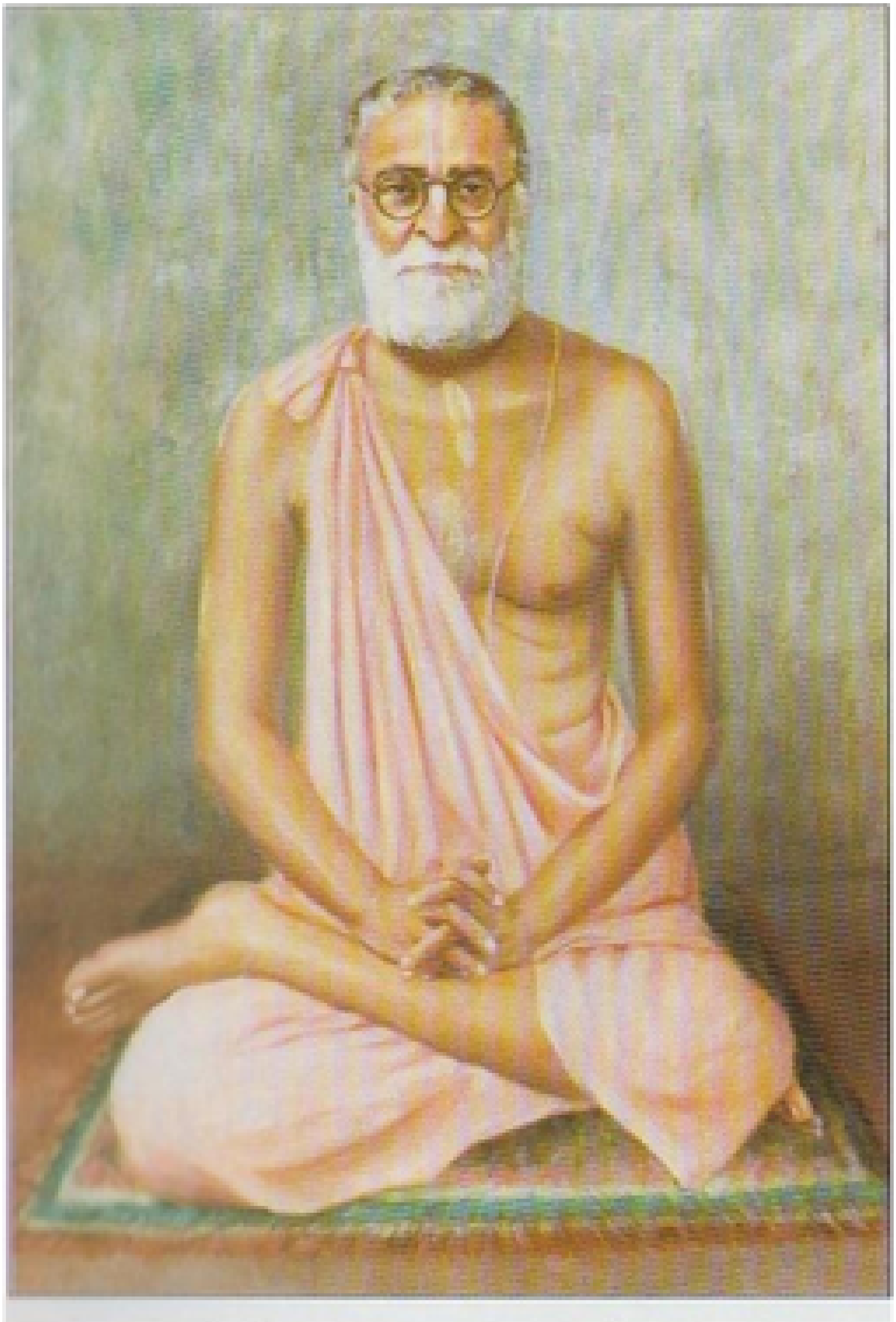

भगवान् श्रीश्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद

श्रीश्रीगुरु-गौरांग-गान्धर्वा-गोविन्दसुन्दर
नवद्वीप श्रीचैतन्य-सारस्वत मठ

श्रीश्रीगुरुगौराङ्गौ जयतः ।

विष्णुपाद-श्रील-भक्तिरक्षक-श्रीधर-देवगोस्वामि-विरचितम्

श्रीश्रीप्रेम-धाम-देव-स्तोत्रम्

देव-सिद्ध-मुक्त-युक्त-भक्त-वृन्द-वन्दितं
पाप-ताप-दाव-दाह-दग्ध-दुःख-खण्डितम् ।
कृष्ण-नाम-सीधु-धाम-धन्य-दान-सागरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥१॥

मर्मानुवाद—देवताओं, सिद्धों, मुक्तों, योगियों और भगवद्भक्तगण सर्वदा जिनकी वन्दना कर रहे हैं (सदोपास्यः ...परमेष्ठि-प्रभृतिभिः), तथा जो (ईश-विमुखता रूप) अपकर्म से उदित (भुक्ति-मुक्ति-सिद्धि-कामना जनित) त्रिताप, विश्व-दावाग्नि को दूर करनेवाला, श्रीकृष्णनाम रूप सुधा-भांडार का निज-नाम-धन्य दान-सागर-स्वरूप हैं (सुधाकर का जन्म क्षीर सागर से है)—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥१॥

स्वर्ण-कोटि-दर्पणाभ-देह-वर्ण-गौरवं
पद्म-पारिजात-गन्ध-वन्दिताङ्ग-सौरभम्।
कोटि-काम-मूर्च्छिताङ्घ्रि-रूप-रास-रङ्गरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥२॥

प्रेम-नाम-दान-जन्य-पञ्च-तत्त्वकात्मकं
साङ्ग-दिव्य-पार्षदास्त्र-वैभवावतारकम्।
श्याम-गौर-नाम-गान-नृत्य-मत्त-नागरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥३॥

कोटि कांचन वर्ण तेजोमय दर्पण की भाँति (जिसमें प्रतिफलन लक्षित है) जिनके श्रीअंग-सौन्दर्य की महिमा, (पृथ्वी के) पद्म और (स्वर्ग के) पारिजात गन्ध मूर्तिमान् होकर जिनके श्रीअंग-सौरभ की वन्दना कर रहे हैं, एवं कोटि कोटि कन्दर्प जिनके श्रीरूप के चरणकमलों में (अपने विश्वप्रसिद्ध रूप के अभिमान में अतितीव्र आघात में) मूर्च्छित होकर गिरे—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांग-सुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥२॥

पंचम पुरुषार्थ श्रीकृष्ण-प्रेम व उनही का अभिन्न साधन स्वरूप श्रीकृष्णनाम वितरण करने के लिए जिन्होंने पंच-

शान्ति-पुर्यधीश-कल्यधर्म्म-दुःख-दुःसहं
जीव-दुःख-हान-भक्त-सौख्यदान-विग्रहम्।
कल्यघौघ-नाश-कृष्ण-नाम-सीधु-सञ्चरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥४॥

तत्त्वात्मक अपना स्वरूप-विलास प्रकाश किया एवं अपने अप्राकृत अंग, उपांग, अस्त्र और पार्षदों के साथ पृथ्वी पर अवतारित हुए, स्वयं वही श्यामसुन्दर आज गौरसुन्दर रूप में अपना नाम गान करते करते नृत्योन्मत्त होकर ग्रामवासी के भाँति नदीया के पथों पर भ्रमण कर रहे हैं—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥३॥

कलि अधर्म-प्राबल्य से पीड़ित शान्तिपुरनाथ श्रीअद्वैत-प्रभु की—तीव्र वेदना सहन न कर सके—जिन्होंने जीव-दुःख मोचन और भक्तसुखवर्द्धन विग्रहस्वरूप में कलि-कल्मष के विध्वंस निमित्त श्रीकृष्णनामामृत व्यापक भाव में वितरण किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥४॥

द्वीप-नव्य-गाङ्ग-बङ्ग-जन्म-कर्म्म-दर्शितं
श्रीनिवास-वास-धन्य-नाम-रास-हर्षितम्।
श्री-हरिप्रियेश-पूज्यधी-शची-पुरन्दरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥५॥

श्रीशची-दुलाल-बाल्य-बाल-सङ्ग-चञ्चलं
आकुमार-सर्व्व-शास्त्र-दक्ष-तर्क-मङ्गलम्।
छात्र-सङ्ग-रङ्ग-दिग्जिगीषु-दर्प-संहरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥६॥

जिन्होंने गौढ़देश, गंगातटस्थ श्रीनवद्वीप में आविर्भाव और गृहस्थ-लीला इत्यादि प्रकाशित किये, एवं श्रीवास के आंगन को धन्य करके संकीर्तन-रास-प्रकाश में (सज्जनों का) हर्ष वर्द्धन किया। जो श्रीलक्ष्मी और श्रीविष्णुप्रिया के प्राणपति हैं तथा माता शची और पिता श्रीजगन्नाथ मिश्र को पूजनीय मानते हैं—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥५॥

जो श्रीशची-दुलाल (यशोदा-दुलाल की भाँति) बच्चों के साथ चापल्य-रत हैं और किशोर उम्र में ही सर्व शास्त्र

वर्ज्य-पात्र-सारमेय-सर्प-सङ्ग-खेलनं
स्कन्ध-वाहि-चौर-तीर्थ-विप्र-चित्र-लीलनम्।
कृष्णनाम-मात्र-बाल्य-कोप-शान्ति-सौकरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥७॥

विशारद हैं। (तत्कालीन नव्य-न्याय नैपुण्य-गर्वपूर्ण नवद्वीप का नास्तिक्यप्राय पाण्डित्य का) तर्कयुक्ति के प्रयोग कौशल में जो मंगलमय (भगवद्भक्ति का) संस्थापक हैं। जिन्होंने छात्रों के साथ (जाह्नवी तट पर) हेलना भाव से प्रसिद्ध दिग्विजयी पण्डित का दम्भ हरण किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥६॥

जिन्होंने शैशव में—परित्यक्त मिट्टी के बर्तनों, कुत्तों के बच्चों तथा ज़हरीले सर्पों के साथ क्रीड़ा की। (गात्र भूषण) इच्छुक चोर के स्कन्ध पर वही चोर के बिठाने से वापस अपने घर पहुँचने की लीला की और सुप्रसिद्ध तीर्थ-यात्रिक विप्र को अभीष्ट देवता रूप में दर्शन दिया और उच्छिष्ट-दान रूप की विचित्र लीला की। शैशव में रोष दिखाते हुए भी जिन्होंने श्रीहरिनाम ही सुनकर शान्त होनेकी

स्नान-गाङ्ग-वारि-बाल-सङ्ग-रङ्ग-खेलनं
बालिकादि-पारिहास्य-भङ्गि-बाल्य-लीलनम् ।
कूट-तर्क-छात्र-शिक्षकादि-वाद-तत्परं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥८॥

श्रीनिमाइ-पण्डितेति-नाम-देश-वन्दितं
नव्य-तर्क-दक्ष-लक्ष-दम्भि-दम्भ-खण्डितम् ।
स्थापितार्थ-खण्ड-खण्ड-खण्डितार्थ-सम्भरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥९॥

लीला की—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥७॥

बचपन में जिन्होंने गंगा में साथियों संग अद्भुत जल-केलि की । बालिकादि के साथ बड़ी चतुराई से रंगीन परिहास्य लीला की । छात्रों और अध्यापकों के साथ नाना प्रकार के कूट तर्क-वितर्क संवाद किये—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥८॥

किशोर उम्र में श्रीनिमाइ पण्डित नाम से पूरे देश में विख्यात और वन्दनीय होकर जिन्होंने नव्यन्याय निपुण

श्लोक-गाङ्ग-वन्दनार्थ-दिग्जिगीषु-भाषितं
व्यत्यलङ्कृतादि-दोष-तर्कितार्थ-दूषितम्।
ध्वस्त-युक्ति-रुद्ध-बुद्धि-दत्त-धीमदादरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥१०॥

सूत्र-वृत्ति-टिप्पनीष्ट-सूक्ष्म-वाचनाद्भुतं
धातु-मात्र-कृष्ण-शक्ति-सर्व्व-विश्व-सम्भृतम्।
रुद्ध-बुद्धि-पण्डितौघ-नान्य-युक्ति-निर्द्धरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥११॥

लाखों दाम्भिक पण्डितों का दम्भ चूर्ण किया। स्थापित युक्ति को खण्ड-विखण्ड करके विरोधि स्तब्ध होने पर खण्डितार्थ फिर स्थापित किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥९॥

श्रीगंगादेवी की वन्दनार्थ दिग्विजयी पण्डित (केशव काश्मिरी) ने जो श्लोक रचकर गाये, उसमें विकृत अलंकारादि दोष प्रदर्शित हुए। दिग्विजयी निज-शक्ति से नाना कूटतर्क उठाने पर भी पराजित हुए। अन्त में विचार-शक्ति और बुद्धि भ्रमित काश्मिरी को (उपस्थित लोगों के अपमान को

कृष्ण-दृष्टि-पात-हेतु-शब्दकार्थ-योजनं
स्फोट-वाद-शृङ्खलैक-भित्ति-कृष्ण-वीक्षणम् ।
स्थूल-सूक्ष्म-मूल-लक्ष्य-कृष्ण-सौख्य-सम्भरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥१२॥

रोककर) पण्डित उचित समादर किया—वही देवता प्रेम-मयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥१०॥

व्याकरण या न्याय शास्त्रों के गम्भीर अर्थ प्रकाशक सूत्रों का स्वाभाविक अर्थ तथा अपने नाना तात्पर्यपूर्ण टीकाओं के द्वारा अत्यद्भुत सूक्ष्मानुसूक्ष्म भाव प्रकाश से पण्डितों को विस्मित किया । मुक्त-प्रग्रह वृत्ति-योग से जिन्होंने दिखाया कि संस्कृत के सात हज़ार धातु मूलतः विश्वम्भर श्रीकृष्ण-तत्त्व की शक्ति प्रकाशित करते हैं । जिनके विचार सम्मुख चकित पण्डितमण्डली की विचार-बुद्धि स्तब्ध हुई और वे निरुत्तर और निर्वाक् हो गये—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥११॥

उन्होंने स्थापित किया कि सर्वशब्द, ध्वनि, उनके अर्थ व उन्हीके परस्पर सम्बन्ध—सर्व कारण के कारण स्वराट्

प्रेम-रङ्ग-पाठ-भङ्ग-छात्र-काकु-कातरं
छात्र-सङ्ग-हस्त-ताल-कीर्त्तनाद्य-सञ्चरम् ।
कृष्ण-नाम-सीधु-सिन्धु-मग्न-दिक्-चराचरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥१३॥

श्रीभगवान् के ईक्षण या स्वाधीन इच्छा निश्चयता विधान करते हैं । पाणिनि-प्रमुख मनिषि स्फोटवाद विचार-प्रयत्न—उसकी श्रृंखला और सामंजस्य विधान की मूल भित्ति श्रीभगवान् की ही विशेष इच्छानुमति है—क्योंकि स्थूल और सूक्ष्म स्थावर-जंगम संपूर्ण सत्ता और गतिशीलता का एकमात्र तात्पर्य श्रीकृष्ण-सुख-संपादन या अद्वय-तत्त्व का लीला-विलास है—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांग-सुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥१२॥

गया से लौटकर छात्रों को फिर पढ़ाना शुरू किया तब प्रबल प्रेमावेग में विचित्र आवेश होने से अध्यापन कार्य असम्भव हुआ । चिरवंचित छात्रों ने नाना प्रकार से अपने अभाग्य पर खेदोक्ति करके दीन भाव से निमाइ पण्डित के अलौकिक शिक्षण प्रतिभा की प्रशंसा की—जिन्होंने छात्र सहानुभूति वशीभूत होकर, विशेष कातर होने पर भी उनको

आर्य्य-धर्म्म-पाल-लब्ध-दीक्ष-कृष्ण-कीर्त्तनं
लक्ष-लक्ष-भक्त-गीत-वाद्य-दिव्य-नर्त्तनम्।
धर्म्म-कर्म्म-नाश-दस्यु-दुष्ट-दुष्कृतोद्धरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥१४।

आशीर्वाद् देकर भावावेश में उन्हीं के साथ तालियाँ बजाकर सर्वप्रथम श्रीकृष्णसंकीर्तन के शुभ सूचना प्रकाशित की। "हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः" श्रीकृष्णसंकीर्तन द्वारा उदित प्रेमरस सिन्धु के उतेजित तरंगों की बाढ़ में सभी दिशाओं में स्थावर जंगम प्रत्येक प्राणियाँ को निमग्न करते रहे—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांग-सुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥१३॥

जो वैदिक धर्म मर्यादा पालनकारी और श्रीगुरु-पदाश्रय पूर्वक श्रीकृष्णकीर्तन प्रवर्त्तनकारी हैं। जो लाखों भक्तों के साथ संकीर्तन में नृत्यविलास परायण महापुरुष हैं और धर्मकर्म-नाशक जगाइ-माधाइ इत्यादि डकैत-दुष्टदल के परमोद्धारण स्वरूप हैं—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांग-सुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥१४॥

म्लेच्छ-राज-नाम-बाध-भक्त-भीति-भञ्जनं
लक्ष-लक्ष-दीप-नैश-कोटि-कण्ठ-कीर्त्तनम्।
श्रीमृदङ्ग-ताल-वाद्य-नृत्य-काजि-निस्तरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥१५॥
लक्ष-लोचनाश्रु-वर्ष-हर्ष-केश-कर्त्तनं
कोटि-कण्ठ-कृष्ण-कीर्त्तनाढ्य-दण्ड-धारणम्।
न्यासि-वेश-सर्व्वदेश-हा-हुताश-कातरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥१६॥

चाँदकाज़ी के श्रीहरिनाम कीर्तन में बाधा उपस्थित करने पर जिन्होंने भक्तगण का भय दूर करने के लिए (स्वयं-स्फूर्त) रात्रिकालीन संकीर्तन शुरू किया जिसमें लाखों मशाल से प्रदीप्त कोटि कोटि लोग थे। जिन्होंने सुमधुर मृदंग-ध्वनि संयोग में करताल इत्यादि वाद्य के साथ नृत्य करके (शासनकर्ता) काज़ी को (शासन के गर्व से बचाकर) आत्मसात् किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥१५॥

लाखों दर्शनार्थी के नयनाश्रु-वर्षा मध्य जिन्होंने परम हर्ष से (जन-कल्याण के लिए) शीर्ष मुंडन किया और कोटि

श्रीयतीश-भक्तवेश-राढ़देश-चारणं
कृष्ण-चैतन्याख्य-कृष्ण-नाम-जीव-तारणम्।
भाव-विभ्रमात्म-मत्त-धावमान-भूधरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥१७॥

श्रीगदाधरादि-नित्यानन्द-सङ्ग-वर्द्धनं
अद्वयाख्य-भक्त-मुख्य-वाञ्छितार्थ-साधनम्।
क्षेत्रवास-साभिलाष-मातृतोष-तत्परं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥१८॥

कोटि लोगों के श्रीहरिसंकीर्तन को जिनके (संन्यास) दण्ड-धारण लीला ने समृद्धिमान् किया। जिनका संन्यास वेश देखकर पुरा देश अत्यन्त दुःखी हुआ—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥१६॥

जिन्होंने नव-यतिराज—भक्तभाव धारण करके भ्रमण में राढ़देश को पवित्र किया। श्रीकृष्ण-चैतन्य—इस अभिनव नाम को ग्रहण करके कृष्णनाम द्वारा जीवोद्धार किया। स्वभजन-विभजन-रसावेश-दिव्योन्माद में हेमगिरि की भाँति यहाँ-वहाँ जो दौड़ते थे—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥१७॥

न्यासिराज-नील-शैल-वास-सार्व्वभौमपं
दाक्षिणात्य-तीर्थ-जात-भक्त-कल्प-पादपम्।
राम-मेघ-राग-भक्ति-वृष्टि-शक्ति-सञ्चरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥१९॥

श्रीगदाधर, श्रीनित्यानन्दादि जिनका संग समृद्ध कर रहे हैं। जो भागवत-प्रधान श्रीअद्वैत की इच्छा पूरी करने के लिए पृथ्वी पर अवतारित हैं। जिन्होंने मातृ-सन्तोष विधान के लिए (संन्यास के बाद) श्रीपुरुषोत्तम क्षेत्र में निवास स्वीकार किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥१८॥

न्यासिराज श्रीचैतन्य ने नीलाचल पहुँचकर सर्वप्रथम (न्याय और वेदान्त के असाधारण प्रतिभा विशिष्ट, भारत के सर्वश्रेष्ठ पण्डित) श्रीवासुदेव सार्वभौम का (श्रीशंकर-विवर्त्तवाद-गर्त्त से) उद्धार किया। तत्पश्चात् (भिन्न मतवाद-संकुल) दक्षिण भारतीय तीर्थ भ्रमण में सभी भक्तों की इच्छा, कल्पतरु रूप में पूर्ण की। (विशेष करके गोदावरी तट पर) भक्तमेघ श्रीरामानन्द में व्रजरागभक्ति-रसवर्षा-शक्ति संचित की (और निज प्रश्न के चातुर्य द्वारा अपने उपदेश

ध्वस्त-सार्व्वभौम-वाद-नव्यतर्क-शाङ्करं
ध्वस्त-तद्विवर्त्त-वाद-दानवीय-डम्बरम्।
दर्शितार्थ-सर्व्व-शास्त्र-कृष्ण-भक्ति-मन्दिरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥२०॥

प्रकाश किये)—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥१९॥

सार्वभौम महाशय ने छल, वितण्डा, निग्रह इत्यादि कूटतर्क कौशल प्रयोग से श्रीशंकराचार्य के शुद्धभक्ति-विरुद्ध निर्विशेषवाद की स्थापना पूर्णप्राण से प्रयत्न की फिर भी नव्य संन्यासि-वेषि प्रतिभोज्ज्वल सुन्दरमूर्ति श्रीचैतन्य ने वेदानुग सुयुक्ति की सहायता लेकर आसानी से समस्त नास्तिक्य-विचार ध्वंस किये। वही बहुविदित शांकर-विवर्तवाद को—श्रद्धा नामक परम आत्मसंपद विहीन आरोहवादी की अहंग्रह-उपासना-परायण बाह्य-नीति-सम्बल आसुरिक-बुद्धि का पाषण्ड उद्यम प्रकाश का प्रच्छादन मात्र कि तरह—जिन्होंने प्रतिपादित किया; और "अपाणिपादो जवनो गृहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः" इत्यादि श्रुति, और सात्वत स्मृति श्रीमद्भागवत का प्रसिद्ध

प्रेमधाम-दिव्य-दीर्घ-देह-देव-नन्दितं
हेम-कञ्ज-पुञ्ज-निन्दि-कान्ति-चन्द्र-वन्दितम्।
नाम-गान-नृत्य-नव्य-दिव्य-भाव-मन्दिरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥२१॥

आत्माराम श्लोक व्याख्या द्वारा प्राकृत विशेषता निरसन करके अप्राकृत में विशेषता या व्यक्तित्व संस्थापन ही श्रुतिसमूह का असल तात्पर्य है—इसे "शक्ति-परिणाम-वाद" की कथा समझाकर, वेद, वेदान्त, पुराण इत्यादि शास्त्र समूह सभी श्रीभगवान् की लीला-महिमा-कीर्तन परायण वाणीमय मन्दिर स्वरूप है—यह प्रदर्शन किया —वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥२०॥

देवगण का आनन्दवर्द्धनकारी सुदीर्घ दिव्य प्रेममय जिनका श्रीविग्रह है, चन्द्र-वन्दित जिनकी श्रीअंगज्योति से कोटि स्वर्णपद्म लज्जित है। श्रीकृष्ण-संकीर्तन में नृत्य-विलास जनित नित्य नव-नवायमान् अप्राकृत सात्विकभाव

कृष्ण-कृष्ण-कृष्ण-कृष्ण-कृष्णनाम-कीर्त्तनं
राम-राम-गान-रम्य-दिव्य-छन्द-नर्त्तनम्।
यत्र तत्र कृष्णनाम-दान-लोक-निस्तरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥२२॥

समूह के जो लीलापीठ स्वरूप हैं—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥२१॥

अतःपर तीर्थ-दर्शन के छल से श्रीहरिनाम द्वारा दक्षिणदेश के उद्धार लक्ष्य जो सुन्दरमूर्ति युवा संन्यासी बहार जाके दाक्षिणात्य के पथ में, देवालय में, तीर्थाश्रम में "कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे" का सुमधुर कीर्तन और "राम राम" गान करके एक तरह के अनिर्वचनीय दिव्यभाव में अनुप्राणित होकर परम मधुर नृत्य-विलास की रचना की एवं देश-काल-पात्र विचार छोड़के समस्त जनसाधारण को श्रीकृष्णनाम गवाकर निस्तार किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥२२॥

गोदवर्य्यवाम-तीर-रामानन्द-संवदं
ज्ञान-कर्म्म-मुक्त-मर्म्म-राग-भक्ति-सम्पदम्।
पारकीय-कान्त-कृष्ण-भाव-सेवनाकरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥२३॥

दास्य-सख्य-वात्स्य-कान्त-सेवनोत्तरोत्तरं
श्रेष्ठ-पारकीय-राधिकाङ्घ्रि-भक्ति-सुन्दरम्।
श्रीव्रज-स्वसिद्ध-दिव्य-काम-कृष्ण-तत्परं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥२४॥

गोदावरी तट पर जिनके रामानन्द-संवाद नामक (श्री-चरितामृत में) सुप्रसिद्ध धर्म-संलाप में—कर्म व ज्ञान से मालिन्यमुक्त हृदय की अनुरागमय सेवा को ही परम संपद बताया है। पारकीय मधुर रस भावसेवा के आकर विषय-वस्तु रूप में एकमात्र श्रीव्रजेन्द्रनन्दन ही निरूपित है—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥२३॥

दास्य से सख्य, वात्सल्य व मधुररस की सेवा—उत्तरोत्तर श्रेष्ठ पारकीय मधुररस में श्रीराधाकैंकर्य (सर्वोत्तम)

शान्त-मुक्त-भृत्य-तृप्त-मित्र-मत्त-दर्शितं
स्निग्ध-मुग्ध-शिष्ट-मिष्ट-सुष्ठ-कुण्ठ-हर्षितम्।
तन्त्र-मुक्त-वाम्य-राग-सर्व्व-सेवनोत्तरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥२५॥

सेवा-सौन्दर्य है एवं श्रीव्रजधाम में स्वतःसिद्ध अप्राकृत काम एकमात्र श्रीव्रजेन्द्रनन्दन ही में तात्पर्य-विशिष्ट—जिनकी प्रेरणा है—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥२४॥

जिन्होंने—शान्तरस में (क्लेश) मुक्ति-सुख, दास्यरस में (सेवा) तृप्ति-सुख और सख्यरस में (स्नेहमयी सेवा) प्रमत्त-सुख के विषय ज्ञापन किये, एवं वात्सल्य में अत्यन्त स्नेह में ज्ञानशून्य गहरी आनन्दानुभूति और मधुररस में पूर्ण उत्कर्ष-विशिष्ट सौख्यानुभव—शास्त्र-शासित (स्वकीय) होकर संकुचित भाव से आस्वादित है, ऐसा समझाया। किन्तु शास्त्र-तन्त्र के परे व्रजराग-सेवा मधुर रस में—विशेष रूप में वाम्यभाव संयुक्त होकर—सर्वोत्तम सेवासुख प्रदान करता है; इसी प्रकार अनुज्ञा की—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥२५॥

आत्म-नव्य-तत्त्व-दिव्य-राय-भाग्य-दर्शितं
श्याम-गोप-राधिकाप्त-कोक्त-गुप्त-चेष्टितम्।
मूर्च्छिताङ्घ्रि-रामराय-बोधितात्म-किङ्करं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥२६॥

नष्ट-कुष्ठ-कूर्म्म-विप्र-रूप-भक्ति-तोषणं
रामदास-विप्र-मोह-मुक्त-भक्त-पोषणम्।
काल-कृष्ण-दास-मुक्त-भट्टथारि-पिञ्जरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥२७॥

जिन्होंने श्रीरामानन्द राय के अलौकिक भाग्य में स्वीय नवद्वीप लीला के अभिनव अवतारित्व का विषय प्रकाश किया। श्रीराधाभाव-द्युति-सुबलित निज श्याम-गोप स्वरूप के प्रेम-रहस्यमय श्रीमूर्ति प्रदर्शन और लीला कथा व्यक्त किये। रामानन्द इसी अभूतपूर्व आश्चर्यजनक रूप-दर्शन से उनके श्रीचरणकमलों में मूर्च्छित होकर गिर गये—अपने स्पर्श से उसी नित्य किंकर का चैतन्य संपादन किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥२६॥

रङ्गनाथ-भट्ट-भक्ति-तुष्ट-भङ्गि-भाषणं
लक्ष्म्य-गम्य-कृष्ण-रास-गोपिकैक-पोषणम्।
लक्ष्म्य-भीष्ट-कृष्ण-शीर्ष-साध्य-साधनाकरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥२८॥

जिन्होंने—श्रीकूर्मक्षेत्र में भक्त ब्राह्मण वासुदेव को आलिंगन करके कुष्ठरोगमुक्त और रूपमय बनाकर प्रसन्न किया एवं रामदास नामक दक्षिण भारत के द्विज-भक्त का मोह (जिसने सोचा कि श्रीसीतादेवी को कोई राक्षस स्पर्श कर सके) दूर करके (अप्राकृत वस्तु सदा जड़ से परे है—यह तत्त्व सिखाया और कूर्म पुराण के प्रमाण दिखाके) शुद्धभक्ति के द्वारा पोषण किया। जिन्होंने अपने एक संगी अबोध विप्र कालाकृष्ण दास को मालाबार देश के भट्टथारि सम्प्रदाय की माया से उद्धार किया—वही देवता प्रेममय-मूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥२७॥

कावेरी के तट पर स्थित श्रीरंगक्षेत्र में, जहाँ के श्री वैष्णव लक्ष्मीनारायण की उपासना सर्वश्रेष्ठ साध्य मानते हैं,

ब्रह्म-संहिताख्य-कृष्ण-भक्ति-शास्त्र-दायकं
कृष्ण-कर्ण-सीधु-नाम-कृष्ण-काव्य-गायकम्।
श्रीप्रतापरुद्र-राज-शीर्ष-सेव्य-मन्दिरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥२९॥

वहाँ श्रीवेंकट भट्ट (श्रीगोपाल भट्ट के पिता) परिवार की सेवा से प्रसन्न होकर जिन्होंने परिहास्य-छल में उपदेश से दिखाया कि लक्ष्मीदेवी (सुदीर्घकाल तपस्या के बाद भी) श्रीकृष्ण की रासलीला में प्रवेश नहीं पाती हैं—क्योंकि सिर्फ गोपीगण ही उस रासलीला का पोषण करती हैं इसलिए (श्रीनारायण के अंकशायिनी) लक्ष्मीदेवी के भी चित्ताकर्षणकारी—(मूल-नारायण) गोप-कुमार श्रीकृष्ण ही सर्वोत्तम साध्य-साधन के मूल उद्दिष्ट तत्त्व हैं—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥२८॥

प्रसिद्ध भक्तिसिद्धान्त ग्रन्थ श्रीब्रह्म-संहिता (दक्षिण देश से संग्रह करके) निज भक्तगण को जिन्होंने प्रदान किया। दक्षिणात्य कवि श्रीबिल्वमंगल रचित श्रीकृष्णकर्णामृतम्

श्रीरथाग्र-भक्त-गीत-दिव्य-नर्त्तनाद्भुतं
यात्रि-पात्र-मित्र-रुद्रराज-हृच्चमत्कृतम्।
गुण्डिचागमादि-तत्त्व-रूप-काव्य-सञ्चरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥३०॥

नामक ग्रन्थ के श्रीव्रजलीलामय श्लोकसमूह जिन्होंने प्रेमपूर्वक गान किया। जिनके श्रीचरण महाराज प्रतापरुद्र ने अपने सिर पर ग्रहण करके पुजा की—वही देवता प्रेममय-मूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥२९॥

श्रीरथ के सम्मुख संकीर्तन में भक्तों से घिरे हुए जिनकी अद्भुत अप्राकृत नटराजमूर्ति के प्रकाश ने समवेत यात्रिगण और पात्र-मित्र के साथ महाराज प्रतापरुद्र के हृदय को चमत्कृत किया। जिन्होंने श्रीजगन्नाथदेव के रथारोहण पूर्वक गुण्डिचा गमनादि लीला का असल तात्पर्य—श्रीरूप गोस्वामी की कविता में (प्रियः सोऽयं...विपिनाय स्पृहयति) संचारित करके प्रकाश किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥३०॥

प्रेम-मुग्ध-रुद्र-राज-शौर्य्य-वीर्य्य-विक्रमं
प्रार्थिताङ्घ्रि-वर्जितान्य-सर्व्व-धर्म्म-सङ्गमम्।
लुण्ठित-प्रताप-शीर्ष-पाद-धूलि-धूसरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥३१॥

दाक्षिणात्य-सुप्रसिद्ध-पण्डितौघ-पूजितं
श्रेष्ठ-राज-राजपात्र-शीर्ष-भक्ति-भूषितम्।
देश-मातृ-शेष-दर्शनार्थि-गौड-गोचरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥३२॥

समस्त उत्तर भारत जब मुसलमान शासन के अधीन था, उस समय के स्वाधीन उत्कल-सम्राट—महाराज प्रतापरुद्र श्रीचैतन्यदेव की प्रतिभा, तेज और प्रेममय व्यवहार दर्शन से अतिशय चमत्कृत और अभिभूत होकर समस्त शौर्य-वीर्य-विक्रम के साथ सभी पूर्व धर्म-संस्कार परित्याग करके एकान्त भाव से श्रीमन्महाप्रभु के पादपद्म में मूर्च्छित होकर गिर पड़े। जिन्होंने उसी शरणागत सम्राट का सिर निज पद रज से अभिषिक्त किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांग-सुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥३१॥

गौरगर्व्वि-सर्व्व-गौड-गौरवार्थ-सज्ञितं
शास्त्र-शस्त्र-दक्ष-दुष्ट-नास्तिकादि-लज्ञितम्।
मुह्यमान-मातृकादि-देह-जीव-सञ्चरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥३३॥

दक्षिण देश के प्रसिद्ध पण्डितों द्वारा प्रपूजित होकर—श्रेष्ठ राजगण और मन्त्री वर्ग की श्रद्धा और सम्मान के शिरोभूषण (साम्प्रदायिक विधान के अनुसार) अपनी जन्मभूमि, गंगा और माता के दर्शन के लिए एक शेष बार भाँति गौड़देश में पदार्पण किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥३२॥

श्रीगौरांग के यश ने समस्त बंगाल को प्लावित किया। सभी गर्वित होकर उस अलौकिक महापुरुष का सत्कार करने उठे। सभी जन-साधारण महाप्रभु में श्रद्धा प्रदर्शन करके पागल होते देखकर कुछ नास्तिक विद्याहंकारी व्यक्ति निज हीनता से लज्ज़ित हुए। जिन्होंने पुनर्दर्शन के द्वारा उनके तीव्र विरह से मृतकल्प जननी और भक्त-स्वजनों के देह में नूतन प्राण संचार किया — वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांग-सुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥३३॥

न्यास-पञ्च-वर्ष-पूर्ण-जन्म-भूमि-दर्शनं
कोटि-कोटि-लोक-लुब्ध-मुग्ध-दृष्टि-कर्षणम् ।
कोटि-कण्ठ-कृष्णनाम-घोष-भेदिताम्बरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥३४॥

आर्त्त-भक्त-शोक-शान्ति-तापि-पापि-पावनं
लक्ष-कोटि-लोक-सङ्ग-कृष्ण-धाम-धावनम् ।
राम-केलि-साग्रजात-रूप-कर्षणादरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥३५॥

संन्यास ग्रहण के पाँच दीर्घ वर्ष पश्चात् जिन्होंने जन्मभूमि श्रीनवद्वीप में एकबार आगमन किया। तब बच्चे-वृद्ध-युवा—कोटि-कोटि देशवासियों ने—आकुल नयन और प्रेम दृष्टि से प्राणाकर्षक की ओर देखा। जिनके उद्दीपन से समवेत जन के मुहुर्मुहुः श्रीहरिध्वनि के उच्चस्वर गगन छेद करके दश दिशाओं में फैल गये—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥३४॥

निज भक्तों की विरहव्यथा सान्त्वना से दूर करके (चापाल-गोपाल इत्यादि के अपराध से पीड़ित लोगों और उन पापी, सभी को शान्ति प्रदान करके) जो (गंगा पथ पर)

व्याघ्र-वारणैन-वन्य-जन्तु-कृष्ण-गायकं
प्रेम-नृत्य-भाव-मत्त-झाडखण्ड-नायकम्।
दुर्ग-वन्य-मार्ग-भट्ट-मात्र-सङ्ग-सौकरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥३६॥

वृन्दावन की ओर भागे एवं लाखों लोग (जन-समुद्र) जिनके पीछे दौड़े किन्तु (गौड़ निकट) रामकेलि तक जाकर प्रभु ने (राजमन्त्रिद्वय—पार्षदभक्त) श्रीरूप और बड़े भाई श्रीसनातन के आकर्षण से स्नेह-प्रदर्शन किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥३५॥

(रामकेलि से गौड़ के पथ द्वारा पुरीधाम लौटके महाप्रभु झाड़खण्ड से होकर श्रीवृन्दावन गये।) व्याघ्र, हाथी, मृग इत्यादि वन्यजन्तु के साथ कृष्णनाम कीर्तन, प्रेम से मधुर नृत्य करके परम भावोन्मत्त वेश में झाड़खण्ड पथ से जो नायक गुजरे। जिन्होंने उस घोर दुर्गम अरण्यपथ पर मात्र बलभद्र भट्टाचार्य को संग लेकर निर्जन भजन का परम सुख अनुभव किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥३६॥

गाङ्ग-यामुनादि-बिन्दु-माधवादि-माननं
माथुरार्त्त-चित्त-यामुनाग्र-भाग-धावनम् ।
स्मारित-व्रजाति-तीव्र-विप्रलम्भ-कातरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥३७॥

माधवेन्द्र-विप्रलम्भ-माथुरेष्ट-माननं
प्रेम-धाम-दृष्टकाम-पूर्व्व-कुञ्ज-काननम् ।
गोकुलादि-गोष्ठ-गोप-गोपिका-प्रियङ्करं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥३८॥

जिन्होंने गंगा तट पर (काशी में) और गंगा-यमुना-संगम में (प्रयाग में) श्रीबिन्दुमाधव इत्यादि देवविग्रह का मान किया। तत्पश्चात् मथुरा-दर्शन की इच्छा से यमुना पथ द्वारा अग्रभाग की ओर तेज़ी से दौड़े और श्रीव्रजलीला स्मृति में अति तीव्र विरह से कातर हैं—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥३७॥

जो श्रीमाधवेन्द्र पुरी के आस्वादित "अयि दीन-दयार्द्र-नाथ...किं करोम्यहम्", "मथुरा मथुरा...मधुरा मधुरा ।" इत्यादि श्लोकों में (प्रोषित भर्तृका) श्रीराधिका के मथुरा-

प्रेम-गुञ्जनालि-पुञ्ज-पुष्प-पुञ्ज-रञ्जितं
गीत-नृत्य-दक्ष-पक्षि-वृक्ष-लक्ष-वन्दितम्।
गो-वृषादि-नाद-दीप्त-पूर्व्व-मोद-मेदुरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥३९॥

गत-कृष्ण-विरह-भाव को सबसे प्रिय, प्रकृष्ट भजन मानते थे। प्रेमलीला-पीठ श्रीव्रजधाम आकर पूर्व लीलास्थल के कुंज और कानन जी भरके जिन्होंने दर्शन किये। गोकुलादि द्वादश वन में अवस्थित गोप-गोपिकागण के साथ नाना प्रकार प्रियाचरण प्रकट किये—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥३८॥

भ्रमण में श्रीवृन्दावन के प्रेमसंलाप-रत भँवरों के अस्फुट गुंजन और शोभित कुसुम फुलों से जो अभिनन्दित है। लाखों वृक्ष और नृत्य-गीत के निपुण नाना पक्षी (द्विजगण) से जो शोभित और वन्दित है। गाय, वत्स और वृषभगण के स्नेहाह्वान से पूर्व लीला की आनन्द-तरंग उद्दीपित होकर जिनका चित्त स्नेहाप्लुत और अभिभूत है—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥३९॥

प्रेम-बुद्ध-रुद्ध-बुद्धि-मत्त-नृत्य-कीर्त्तनं
प्लाविताश्रु-काञ्चनाङ्ग-वास-चातुरङ्गनम्।
कृष्ण-कृष्ण-राव-भाव-हास्य-लास्य-भास्वरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥४०॥

प्रेम-मुग्ध-नृत्य-कीर्त्तनाकुलारिटान्तिकं
स्नान-धन्य-वारि-धान्य-भूमि-कुण्ड-देशकम्।
प्रेम-कुण्ड-राधिकाख्य-शास्त्र-वन्दनादरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥४१॥

प्रबल प्रेमोदय से बाह्य चेतना खोकर जिन्होंने उन्माद-प्राय नृत्य और कीर्तन किया। निरन्तर नयनाश्रु-धारा ने जिनका दिव्य हेम पर्वत जैसा ऊँचा कलेवर, अरुण वसन और भूमि को सभी दिशाओं में प्लावित किया। जिन्होंने "कृष्ण कृष्ण" कहकर, उच्चस्वरों में उन्मादमय शब्दों से महाभावावेग में अट्टहास्य इत्यादि विविध भाव के नाना विलास से दीप्ति पाई—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांग-सुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥४०॥

प्रेममोहित होकर नृत्य कीर्तन करते करते जिन्होंने आकुल आवेग से अरिष्ट के (श्रीराधाकुण्ड के) समीप

तिन्तिडी-तलस्थ-यामुनोर्म्मि-भावनाप्लुतं
निर्जनैक-राधिकात्म-भाव-वैभवावृतम्।
श्याम-राधिकाप्त-गौर-तत्त्व-भित्तिकाकरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥४२॥

जाकर अचानक धान्यक्षेत्र जल से स्नान करके आपने आपको धन्य माना और दिखाया कि 'यही श्रीराधाकुण्ड हैं'। अत्यन्त स्नेह से उसी प्रेममय श्रीराधाकुण्ड का ''यथा राधा...अत्यन्तवल्लभा''—इसी प्रकार शास्त्रीय वन्दना से आदर किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥४१॥

जो श्रीव्रजभूमि के विभिन्न लीलास्थल दर्शन करते करते द्वापर-युग के सुप्रसिद्ध इमली पेड़ के तले बैठकर श्रीयमुना की लहरों का खेल देखकर सखीगण के साथ जलकेलि निगूढ़-लीला-भावना के उद्दीपन से अभिभूत हुए। एकान्त में श्रीराधा-मधुरिमा हृदयंगम करके तदेकात्मभाव-विलास में आत्म-विस्मृत हुए एवं श्रीश्यामसुन्दर एकान्त भाव से श्रीराधाभाव विभावित हुए। जो स्थान श्रीगौरतत्त्व का आदि उत्स क्षेत्र रचित है—उसी आकर में जो आकर रूप

शारिका-शुकोक्ति-कोतुकाढ्य-लास्य-लापितं
राधिका-व्यतीत-कामदेव-काम-मोहितम्।
प्रेम-वश्य-कृष्ण-भाव-भक्त-हृच्चमत्कृतं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥४३॥

श्रीप्रयाग-धाम-रूप-राग-भक्ति-सञ्चरं
श्रीसनातनादि-काशि-भक्ति-शिक्षणादरम्।
वैष्णवानुरोध-भेद-निर्व्विशेष-पञ्जरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥४४॥

में उपस्थित हैं—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥४२॥

जिनके उद्देश्य के लिए शुक और शारिका कौतुकमय वर्तालाप-क्रीड़ा प्रदर्शित करते है और ("राधासंगे यदा भाति...स्वयं मदनमोहितः" इत्यादि) जिसमें श्रीराधा विरह से पीड़ित कामदेव श्रीकृष्ण, काम-मोहित की तरह उल्लिखित है। इसमें जिन्होंने प्रेमवश श्रीकृष्ण का चरित्र-माधुर्य के प्रदर्शन से भक्तों का हृदय चमत्कृत किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥४३॥

न्यासि-लक्ष-नायक-प्रकाशानन्द-तारकं
न्यासि-राशि-काशि-वासि-कृष्ण-नाम-पारकम्।
व्यास-नारदादि-दत्त-वेदधी-धुरन्धरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥४५॥

जिन्होंने श्रीप्रयागधाम में (दशाश्वमेध घाट में) श्रीरूप को व्रजरस—साध्य साधन क्रमानुसार उपदेश करके रस विस्तार की शक्ति संचार की। उस के बाद काशीधाम में श्रीसनातन को शुद्ध-भक्ति कथा—सम्बन्ध, अभिधेय, प्रयोजन विचार, विस्तृत रूप में शिक्षादान की। महाराष्ट्रीय विप्र और तपन मिश्रादि के विशेष प्रार्थना से वाराणसी के मायावादी संन्यासियों के साथ विचारसभा में निर्विशेष ब्रह्मवाद के संकीर्ण और मत्सरतापूर्ण अहंग्रहोपासना की अन्ध धारणा विध्वंस करके, परब्रह्म की आराधना में स्वाधीनता की घोषणा की—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥४४॥

(वृन्दावन से जगन्नाथ पुरी लौटते समय, प्रयाग में श्रीरूपशिक्षा पूर्ण करके श्रीचैतन्यदेव वाराणसी पहुँचे—) काशी मैं लाखों संन्यासी के महान् नेता (श्रीशंकराचार्य

ब्रह्म-सूत्र-भाष्य-कृष्ण-नारदोपदेशकं
श्लोक-तुर्य्य-भाषणान्त-कृष्ण-सम्प्रकाशकम्।
शब्द-वर्त्तनान्त-हेतु-नाम-जीव-निस्तरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥४६॥

भाँति) श्रीप्रकाशानन्द सरस्वती को (शास्त्र विचार और अपने स्वच्छ प्रेममय व्यक्तित्व के प्रभाव से) जिन्होंने विवर्तवाद के कुतर्क-गर्त से उद्धार किया और अनेक संन्यासी विशिष्ट समस्त काशीवासी को श्रीकृष्णनाम-संकीर्तन में प्रमत्त करके संसार-सिन्धु से परित्राण किया। श्रीनारद-व्यास-परम्परा-प्रदत्त श्रौत-सिद्धान्त सुधावाही श्रीरथ के जो दिव्य धुरन्धर-स्वरूप हैं—वही देवता प्रेममय-मूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥४५॥

(काशी के संन्यासिसभा में विचारधारा का संक्षिप्त परिचय—) श्रीकृष्ण-ब्रह्म-देवर्षि परम्परा-प्राप्त—स्वयं श्रीव्यासदेव ने नारद के उपदेश से जो ब्रह्मसूत्र व्याख्या में लिखा है, वही वेदान्तभाष्य श्रीमद्भागवत विचार की जिन्होंने शिक्षा दी। श्रीमद्भागवत की चतुःश्लोकी व्याख्या में (अहमेवासमेवाग्रे...) जिन्होंने चराचर विश्व के मूल

आत्म-राम-वाचनादि-निर्व्विशेष-खण्डनं
श्रौत-वाक्य-सार्थकैक-चिद्विलास-मण्डनम्।
दिव्य-कृष्ण-विग्रहादि-गौण-बुद्धि-धिक्करं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥४७॥

आकरतत्त्व रूप से अद्वयज्ञान स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण को ही सम्प्रकाशित किया । "अनावृत्तिः शब्दात् अनावृत्तिः शब्दात्" सूत्र के अर्थ प्रकाश में शब्द-ब्रह्म या कृष्णनाम को ही जीव के आवर्त्तन-निवारक निःश्रेयस रूप में प्रतिपादन किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥४६॥

श्रीमद्भागवत के सुप्रसिद्ध श्लोक की (एकषष्टि-प्रकार) व्याख्या द्वारा जिन्होंने शंकराचार्य-प्रवर्तित निर्विशेष ब्रह्म-वाद खण्डित किया और "अपाणिपादो जवनो गृहीता पश्यत्यचक्षुः स श्रृणोत्यकर्णः" इत्यादि बहु श्रुतिवाक्य द्वारा अद्वयज्ञान श्रीभगवान् के चिन्मय-लीला-माधुर्य की शोभा प्रकाश की। अप्राकृत अर्चाविग्रह को (भगवन्नाम-रूप-गुण-लीला इत्यादि को) मायिक (माया कल्पित) सत्त्वगुण का विकार-मात्र—मायावाद की इसी घृणित धाराणा को

ब्रह्म-पारमात्म्य-लक्षणाद्वयैक-वाचनं
श्रीव्रज-स्वसिद्ध-नन्दलील-नन्द-नन्दनम्।
श्रीरस-स्वरूप-रास-लील-गोप-सुन्दरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥४८॥

अत्यन्त धिक्कारा—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥४७॥

ज्ञानी और योगिगण ब्रह्म-परमात्मा रूप को मूल मानते है। वह तत्त्वद्वय को जिन्होंने (श्रीभागवत के "ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्द्यते" वचन द्वारा) क्रोड़ीभूत करके अद्वयज्ञान का स्वरूप—परम मौल सम्बन्ध तत्त्व श्रीभगवत्-तत्त्व स्वरूप के अन्तर्भुक्त किया। श्रीभगवान् के स्वतःसिद्ध आनन्दमयता की निगूढ़ लीला प्रकाश विषय में वैकुण्ठ के उपर (वैकुण्ठाज्ज्ञनितो वरा मधुपरी) नित्यव्रज में वात्सल्यरस प्रयोजन से विशुद्ध सेवा में अद्वयतत्त्व के नन्दनन्दनत्व सिद्धि की दिग्दर्शन दी। अंत में रसतत्त्व के स्वरूप विचार में सर्व रस के समाहार आद्य और मुख्य रसाश्रय में अखिल रसामृतमूर्ति श्रीगोपीजनवल्लभ को ही

राधिका-विनोद-मात्र-तत्त्व-लक्षणान्वयं
साधुसङ्ग-कृष्ण-नाम-साधनैक-निश्चयम्।
प्रेम-सेवनैक-मात्र-साध्य-कृष्ण-तत्परं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥४९॥

स्वयं भगवत्ता के स्वरूप निर्णय और सर्वाचिन्त्य परात्परधाम में स्वरूपशक्ति का चित् लीलारसमय (सत्यं शिवं सुन्दरम्) श्यामसुन्दर की रासलीला ही (प्रिय-रस-प्लावन) जीव का सर्वोत्तम लक्ष्यस्थल ईंगित किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥४८॥

इसी रूप में समस्त श्रौत-सिद्धान्त के परम सार स्वरूप में श्रीराधाविनोद ही एकमात्र सम्बन्ध-तत्त्व हैं। साधुसंग में श्रीकृष्णनाम कीर्तन ही एकमात्र अभिधेय हैं। गोपीजन-वल्लभ श्रीराधाकान्त की प्रेम सेवा ही एकमात्र प्रयोजन रूप में—जिन्होनों सुधीजन-सभा में सर्वोत्तम सिद्धान्त प्रदान किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥४९॥

आत्म-राम-वाचनैकषष्टिकार्थ-दर्शितं
रुद्र-संख्य-शब्द-जात-यद्यदर्थ-सम्भृतम्।
सर्व्व-सर्व्व-युक्त-तत्तदर्थ-भूरिदाकरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥५०॥

श्रीसनातनानु-रूप-जीव-सम्प्रदायकं
लुप्त-तीर्थ-शुद्ध-भक्ति-शास्त्र-सुप्रचारकम्।
नील-शैल-नाथ-पीठ-नैज-कार्य्य-सौकरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥५१॥

श्रीभागवत के सुप्रसिद्ध "आत्मारामाश्च...इत्थम्भूतगुणो हरिः" श्लोक की व्याख्या जिन्होंने (श्रीसनातन और बाद में प्रकाशानन्द को) एकषष्टि-प्रकार में अर्थ प्रकाश किये। इसी श्लोक के एकादशपद के विविध आभिधानिक अर्थ परस्पर, पृथक् पृथक्, संयोजन द्वारा शुद्धभक्तिसिद्धान्त सुप्रचुर अर्थ सम्पद के आकर रूप में इस श्लोक को प्रदर्शन किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥५०॥

श्रीसनातन और तदनुग श्रीरूप एवं श्रीजीवादि गोस्वामी वर्ग को अनुप्राणित करके जिन्होंने निज सम्प्रदाय प्रकाश

त्याग-बाह्य-भोग-बुद्धि-तीव्र-दण्ड-निन्दनं
राय-शुद्ध-कृष्ण-काम-सेवनाभि-नन्दनम्।
राय-राग-सेवनोक्त-भाग्य-कोटि-दुष्करं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥५२॥

की। लुप्ततीर्थ और शुद्धभक्तिशास्त्र (विधि, राग और विचार समन्वित) सुन्दर भाव से प्रचार की व्यवस्था की। नीलाचलनाथ श्रीजगन्नाथ देव के सेवक के पास स्वीय आराधना के स्वरूप प्रकाश में आदर प्रदर्शन किया— वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥५१॥

बाह्य त्याग-वेशधारी और भीतर से भोग कामी को (मर्कट वैरागी को) तीव्र भाव से घृणा की, किन्तु रामानन्द राय जैसे उच्चाधिकारी वैष्णव के रागमार्ग के गूढ़ सेवाभाव प्रदर्शन को (श्रीजगन्नाथदेव के सम्मुख नाट्याभिनय शिक्षा के लिए देवदासीगण के साथ असंकोचित व्यवहार को) अभिनन्दित किया। साथ साथ राय के राग-सेवाधिकार कोटि कोटि जन्म के सुदुर्लभ भाग्यलब्ध संपद की तरह

श्रीप्रयाग-भट्ट-वल्लभैक-निष्ठ-सेवनं
नील-शैल-भट्ट-दत्त-राग-मार्ग-राधनम्।
श्रीगदाधरार्पिताधिकार-मन्त्र-माधुरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥५३॥

श्रीस्वरूप-राय-सङ्ग-गाम्भिरान्त्य-लीलनं
द्वादशाब्द-वह्नि-गर्भ-विप्रलम्भ-शीलनम्।
राधिकाधिरूढ-भाव-कान्ति-कृष्ण-कुञ्जरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥५४॥

घोषणा की—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥५२॥

शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय के (भविष्य में सुप्रसिद्ध वैष्णव आचार्य) आन्ध्र-ब्राह्मण श्रीवल्लभ भट्ट ने प्रयाग धाम में और यमुना के उस पार आड़ाइल् ग्राम में अपने घर में ऐकान्तिक निष्ठा से जिनकी सेवा की। तत्पश्चात् श्रीपुरुषोत्तम क्षेत्र में (वात्सल्यरस के सेवक) श्रीवल्लभभट्ट को किशोर कृष्ण के मधुररति में प्रवेश दिया। श्रीगदाधर पण्डित के द्वारा तदुपयोगी मन्त्रादि शिक्षा की व्यवस्था जिन्होनों की—

श्रीस्वरूप-कण्ठ-लग्न-माथुर-प्रलापकं
राधिकानु-वेदनार्त्त-तीव्र-विप्रलम्भकम्।
स्वप्नवत्-समाधि-दृष्ट-दिव्य-वर्णनातुरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥५५॥

वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥५३॥

अति अन्तरंगी श्रीस्वरूप-दामोदर और श्रीरामानन्द राय के साथ जिनकी जन-हृदयभेदी गम्भीरलीला की प्रकाश पराकाष्ठा हुई। दीर्घ बारह वर्ष की तीव्र श्रीकृष्ण-विरहाग्नि में उद्गीरणमय दिव्योन्माद जिन्होंने संलाप किया (बाहिरे विषज्वाला हय, अन्तरे आनन्दमय)। जो श्रीराधा के प्रगाढ़ भाव से सर्वात्म प्रभावित और उनके श्रीअंगज्योतिः से सुशोभित हैं — मदमत्त गजराज जैसे स्वयं गोविन्द — वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥५४॥

श्रीस्वरूप दामोदर के गले लगकर जिन्होंने—श्रीकृष्ण के मथुरा गमन पश्चात् राधाराणी के विरहप्रलाप में खेद को दोहराया। श्रीराधाराणी की वेदना-कातर, तीव्र विरहानल-

सात्विकादि-भाव-चिह्न-देह-दिव्य-सौष्ठवं
कूर्म्मधर्म्म-भिन्न-सन्धि-गात्र-पुष्प-पेलवम्।
ह्रस्व-दीर्घ-पद्म-गन्ध-रक्त-पीत-पाण्डुरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥५६॥

तीव्र-विप्रलम्भ-मुग्ध-मन्दिराग्र-धावितं
कूर्म्म-रूप-दिव्य-गन्ध-लुब्ध-धेनु-वेष्टितम्।
वर्णितालि-कूल-कृष्ण-केलि-शैल-कन्दरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥५७॥

प्रदीप्त भाव का आस्वादन किया। समाधि विलास में प्रत्यक्ष—बाह्यलोगों को स्वप्न जैसा, वह तथ्यसमूह—भारी हृदय से वर्णन किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांग-सुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥५५॥

अष्ट सात्विक भाव में प्रेम के चिह्न जिनके श्रीअंग की दिव्य शोभा का वर्द्धन कर रहे हैं। कभी रक्तवर्ण, कभी पीतवर्ण, कभी मल्लिका पुष्प के समान शुभ्रवर्ण से सुशोभितरूप में प्रकाशित हुए—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥५६॥

इन्दु-सिन्धु-नृत्य-दीप्त-कृष्ण-केलि-मोहितं
ऊर्म्मि-शीर्ष-सुप्त-देह-वात-रङ्ग-वाहितम्।
यामुनालि-कृष्ण-केलि-मग्न-सौख्य-सागरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥५८॥

तीव्र विरह में मोहित और कातर होकर जो श्रीजगन्नाथ मन्दिर के सिंहद्वार की ओर दौड़े और दूसरे क्षण में अति विरह से श्रीकूर्म-मूर्ति रूप में वहाँ पर गिर पड़े। श्रीमन्दिर के तेलांगी गो समूह जिनके श्रीअंग से निःसृत एक अभूतपूर्व दिव्य सौरभ से आकर्षित होकर घेरे रहते हैं—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥५७॥

(एक ज्योत्स्नामयी रात को भक्तों के साथ समुद्र तीर पर श्रीकृष्णलीला-रस-आस्वादन में महाप्रभु परिभ्रमण कर रह हैं) सागर के उठते हुए लहरों में प्रतिबिम्बित चन्द्र का नृत्य देखकर एका एक श्रीकृष्ण की यमुनाविहार लीला उद्दीपन होने से अभिभूत होकर मूर्च्छित हुए। दूसरे क्षण अदृश्य जिनका सुप्तवत् श्रीविग्रह (समाधि में हल्के काठ जैसे) लहरों पर लेटकर पवन द्वारा मधुर छंद से वाहित हैं। उस

रात्रि-शेष-सौम्य-वेश-शायितार्द्र-सैकतं
भिन्न-सन्धि-दीर्घ-देह-पेलवाति-दैवतम्।
श्रान्त-भक्त-चक्रतीर्थ-हृष्ट-दृष्टि-गोचरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥५९॥

आर्त्त-भक्त-कण्ठ-कृष्ण-नाम-कर्ण-हृद्गतं
लग्न-सन्धि-सुष्ठु-देह-सर्व्व-पूर्व्व-सम्मतम्।
अर्द्धबाह्य-भाव-कृष्ण-केलि-वर्णनातुरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥६०॥

समय श्रीकृष्ण और सखीगण की कालिन्दी-जलकेलि का दर्शन करने से सुगंभीर सुखानुभूति-सागर में जो निमग्न रहे—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥५८॥

रात भर खोज करके भक्तगण ने परिश्रान्त होकर भोर में चक्रतीर्थ के निकट आर्द्र बालुका के उपर जिनका सुदीर्घ देवतनु शिथिल-सन्धि अवस्था में हर्षोत्फुल्ल नयन से दर्शन किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥५९॥

यामुनाम्बु-कृष्ण-राधिकालि-केलि-मण्डलं
व्यक्त-गुप्त-दृप्त-तृप्त-भङ्गि-मादनाकुलम्।
गूढ-दिव्य-मर्म्म-मोद-मूर्च्छना-चमत्करं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥६१॥

दुःखी भक्तों की उच्च कृष्णकीर्त्तन-ध्वनि कर्ण द्वारा जिनके हृदय को स्पर्श करते ही उनकी सन्धियाँ पहले जैसे संलग्न हुई और स्वाभाविक सुन्दर विग्रह प्रकाश हुआ। विरह पीड़ित हृदय से समाधि में श्रीकृष्णलीला जिन्होंने वर्णन की—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥६०॥

यमुना जल में श्रीराधा-गोविन्द सखीगण के साथ विविध अद्भुत प्रकार के जलविहार करते हैं जो कभी व्यक्त, कभी गुप्त, कभी दृप्त, और कभी परितृप्त है। यह नाना शृंगार लीला हृदय और प्राण को आकुल करते है। पूरे विश्व को विस्मित करता हुआ मर्म-सुर-मूर्च्छना वही अप्राकृत गूढ़ आनन्दमय कोष है—जिन्होंने विस्तार किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥६१॥

आस्य-घर्षणादि-चाटकाद्रि-सिन्धु-लीलनं
भक्त-मर्म्म-भेदि-तीव्र-दुःख-सौख्य-खेलनम्।
अत्यचिन्त्य-दिव्य-वैभवाश्रितैक-शङ्करं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥६२॥

श्रोत्र-नेत्र-गत्यतीत-बोध-रोधिताद्भुतं
प्रेम-लभ्य-भाव-सिद्ध-चेतना-चमत्कृतम्।
ब्रह्म-शम्भु-वेद-तन्त्र-मृग्य-सत्य-सुन्दरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥६३॥

चटक पर्वत दर्शन से विचित्र भजन-विलास उद्दीपित होते हुए असहनीय विरह में जो आपना श्रीमुख धरती पर मर्दन करते हैं और जलकेलि स्मरण से समुद्र में कूद पड़ते हैं। ऐसे दिव्य प्रेमोन्माद के लक्षण प्रदर्शन करके अप्राकृत श्रीकृष्णप्रेम-महासागर के सुख-दुःख के उत्ताल-तरंग की अनन्त गंभीर दिग्दर्शनलीला भक्तों के हृदय को संचित करती हैं। जिनकी यह लीला मात्र आपने एकान्त आश्रितगण को ही अचिन्त्यमंगल प्रदान करती हैं—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥६२॥

विप्र-शूद्र-विज्ञ-मूर्ख-यावनादि-नामदं
वित्त-विक्रमोच्च-नीच-सज्जनैक-सम्पदम्।
स्त्री-पुमादि-निर्व्विवाद-सार्व्ववादिकोद्धरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥६४॥

जो चक्षु और श्रुति से परे हैं—जो बुद्धि की गति को भी स्तब्ध करते हैं एवं प्रेमारूढ़ अवस्था में सुप्रतिष्ठित चेतना को भी चमत्कृत करते हैं (अर्थात् वे भी समझ नहीं सकते हैं)। ब्रह्मा और शम्भु—उनके प्रकाशित शास्त्र—वेद और तन्त्र जिनकी खोज कर रहे हैं—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥६३॥

जिन्होंने—ब्राह्मण, शूद्र, पण्डित, मूर्ख, यवनादि अनार्यकुल को भी श्रीहरिनाम द्वारा शुद्ध किया और धनी-निर्धन, सबल-दुर्बल, सभी भक्तों के संपद स्वरूप हैं। नर-नारी भेद विचार छोड़कर सभी चिदचित् विश्वों के सर्ववादिसम्मत जो उद्धारकर्ता हैं—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥६४॥

सिन्धु-शून्य-वेद-चन्द्र-शाक-कुम्भ-पूर्णिमा
सान्ध्य-चान्द्रकोपराग-जात-गौर-चन्द्रमा।
स्नान-दान-कृष्णनाम-सङ्ग-तत्-परात्परं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥६५॥

आत्म-सिद्ध-सावलील-पूर्ण-सौख्य-लक्षणं
स्वानुभाव-मत्त-नृत्य-कीर्त्तनात्म-वण्टनम्।
अद्वयैक-लक्ष्य-पूर्ण-तत्त्व-तत्-परात्परं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥६६॥

शकाब्द १४०७ फाल्गुनी पुर्णिमा पर सन्ध्या काल में चन्द्रग्रहण योग में श्रीगौरचन्द्र (माँ शची के आंगन में) आविर्भूत हुए। वही परात्पर तत्त्व श्रीगौरांग श्रीहरि—पुण्यगण के पवित्र गंगास्नान, नाना रत्न-द्रव्य दान और सर्वोपरि श्रीहरिनाम-संकीर्तन के संग अवतीर्ण हुए—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥६५॥

श्रीपुरीश्वरानुकम्पि-लब्ध-दीक्ष-दैवतं
केशवाख्य-भारती-सकाश-केश-रक्षितम् ।
माधवानुधी-किशोर-कृष्ण-सेवनादरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥६७॥

स्वतःसिद्ध सहज-लीलामय परिपूर्ण आनन्द-तत्त्व-लक्षण के आकर—आत्म-सुखानुभव में अत्यन्त मत्त होकर नृत्य, और उसी सुखविलास और उसके वितरण से उदित कीर्तन—यह दोनों से जो परिपूर्ण हैं । अद्वयतत्त्व के स्वाभाविक और मौलिक वास्तव लक्षण-विशिष्ट—अतएव असमोर्द्ध—एकमात्र परात्पर तत्त्व हैं—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥६६॥

जो देवता ने श्रीईश्वरपुरी को धन्य करके उन्हीं से दीक्षा लेकर कृपा प्रकाश की और केश मुण्डन कराके उपस्थित श्रीकेशव भारती से संन्यासवेश ग्रहण किया । जिन्होंने श्रीमाधवेन्द्र-पुरी प्रदर्शित किशोर श्रीकृष्ण की मधुर रति ही श्रेष्ठ सेवा है कहकर आदर किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ ॥६७॥

सिन्धु-बिन्दु-वेद-चन्द्र-शाक-फाल्गुनोदितं
न्यास-सोम-नेत्र-वेद-चन्द्र-शाक-बोधितम्।
बाण-बाण-वेद-चन्द्र-शाक-लोचनान्तरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥६८॥

श्रीस्वरूप-राय-सङ्ग-हर्ष-शेष-घोषणं
शिक्षणाष्टकाख्य-कृष्ण-कीर्त्तनैक-पोषणम्।
प्रेम-नाम-मात्र-विश्व-जीवनैक-सम्भरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥६९॥

शकाब्द १४०७ में फाल्गुन मास में गौड़गगन (श्रीमायापुर) में जो उदित हुए और शकाब्द १४३१ में जगन्मंगल निमित्त संन्यास ग्रहण किया एवं शकाब्द १४५५ में लोक दृष्टि से अन्तर्धान हो गये—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥६८॥

परम प्रियपार्षद श्रीस्वरूप दामोदर और श्रीरामानन्द राय के समीप जिन्होंने परम उल्लास से कहा कि कलिकाल में श्रीकृष्णनाम संकीर्तन ही जीव-मंगल का परम उपाय है—"हर्ष से प्रभु कहे,—सुनो स्वरूप राम राय। नाम संकीर्तन—कलौ परम उपाय॥" जिन्होंने स्वयं रचित

प्रेम हेम-देव देहि दासरेष मन्यतां
क्षम्यतां महापराध-राशिरेष गण्यताम्।
रूप-किङ्करेषु रामानन्द दास-सम्भरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥७०॥

सुप्रसिद्ध शिक्षाष्टक में श्रीकृष्णसंकीर्तन को ही श्रेष्ठस्थान दिया। प्रेम से श्रीकृष्णनाम ग्रहण ही जगत् के जीव (विश्व-चेतन) को पूर्ण रूप में भरण-पोषण करता है—ऐसा उपदेश दृढ़ भाव से किया—वही देवता प्रेममयमूर्ति श्रीगौरांगसुन्दर की मैं वन्दना करता हुँ॥६९॥

हे स्वर्णिम स्वामी! (सुवर्णवर्ण हेमांग) हे प्रेम के सागर! अपना प्रेमधन वितरण करो। इस अधम दास का थोड़ा ध्यान रखना, और अशेष अपराधराशि क्षमा करो। अपने अति अन्तरंग सेवक श्रीरूप के किंकरों में स्वीकार करो। इस रामानन्द-दास के पालन कर्ता और भाग्यविधाता एकमात्र तुम ही हो। हे प्रेममय देव श्रीगौरांगसुन्दर—तुम्हारी ही मैं वन्दना करता हुँ॥७०॥

सश्रद्धः सप्त-दशकं प्रेम-धामेति-नामकम्।
स्तवं कोऽपि पठन् गौरं राधाश्यममयं व्रजेत्॥७१॥

पञ्चमे शतगौराब्दे श्रीसिद्धान्त-सरस्वती।
श्रीधरः कोऽपि तच्छिष्यस्त्रिदण्डी नौति सुन्दरम्॥७२॥

इसी प्रेम-धम-स्तोत्र नामक स्तव-सप्तति जो श्रद्धायुक्त होकर पाठ करेंगे, उन्हे श्रीराधाभावद्युति-सुबलित श्याम-सुन्दरस्वरूप श्रीगौरांगसुन्दर की सेवा लाभ होगी॥७१॥

गौराब्द ५०० में यह स्तव की रचना भगवान् श्रील श्रीभक्तिसिद्धान्त सरस्वती के त्रिदण्डी शिष्य श्रीभक्तिरक्षक श्रीधर ने की है॥७२॥

Publications (brief list)

By/about Śrīla B.R. Śrīdhar Dev-Goswāmī Mahārāj:

Centenary Anthology
Exclusive Guardianship—Concise Conclusions of Devotional Life
Golden Volcano of Divine Love
Holy Engagement
Home Comfort—An Introduction to Spiritual Life
Loving Search for the Lost Servant
Search for Śrī Kṛṣṇa—Reality the Beautiful
Sermons of the Guardian of Devotion Vol. I to Vol IV
Sri Gaudiya Darshan (Periodical)
Śrī-Śrī Prapanna-jīvanāmṛtam—(Positive and Progressive Immortality)
Śrīla Guru Mahārāj — His Divine Pastimes & Precepts in Brief
Śrīmad Bhagavad-gītā—(The Hidden Treasure of the Sweet Absolute)
Subjective Evolution—(The Play of the Sweet Absolute)

By/about Śrīla B.S. Govinda Dev-Goswāmī Mahārāj:

Dignity of the Divine Servitor
Divine Guidance
Golden Reflections
Divine Message of the Devotees
The Benedictine Tree of Divine Aspiration
The Divine Servitor

Various:

Relative Worlds (by Śrīla Bhaktisiddhānta Saraswatī Ṭhākur)
Śrī Brahma-saṁhitā (Bengali/English)
Śrī Chaitanya Mahāprabhu—Life and Precepts (Śrīla Bhaktivinoda Ṭhākur)
Śrī Chaitanya Saraswatī—(The Voice of Śrī Chaitanyadev) #1
Śrī Chaitanya Saraswatī— #2 (Colour—English, Hindi, Gujarati, Bengali)

Hindi हिन्दी—पारमार्थ पथ निर्देश, रसराज श्रीकृष्ण, साधन पाथ, श्रीशिक्षाष्टकम्, अमृत विद्या

Also Bengali, Gujarati, Czech, German, Hungarian, Italian, Oriyan, Portugese, Russian, Spanish, etc. (enquiries welcome)

Sri Chaitanya Saraswat Math

Sri Chaitanya Saraswat Math Road, Kolerganj, P.O. Nabadwip, Dt. Nadia, West Bengal, Pin 741302, India. ☎: (03472) 40086 & 40752
E-mail: govin@giascl01.vsnl.net.in

Principal Web sites:

http://www.lcd.com/math/

http://ourworld.compuserve.com/homepages/amrita

Affiliated Centres & Branches

INDIA

Sree Chaitanya Saraswata Krishnanushilana Sangha,
487 Dum Dum Park,
Calcutta 700 055, ☎: (033) 551-9175
e-mail: govin@giascl01.vsnl.net.in

Sree Chaitanya Saraswata Krishnanushilana Sangha, Kaikhali, Chiriamore, (by Calcutta airport),
P.O.: Airport,
Calcutta Pin 700 052, W. B.

Sri Chaitanya Saraswat Ashram,
P.O. & Vill. Hapaniya, Dt. Burdwan, W. B.

Sri Chaitanya Sridhar Govinda Seva Ashram,
Vill. Bamunpara, P.O. Khanpur,
Dist. Burdwan, W. B.

Sri Chaitanya Saraswat Math,
Bidhava Ashram Rd., Gaur Batsahi,
Puri, Pin 752001, Orissa. ☎: (06752) 23413

Srila Sridhar Swami Seva Ashram, Dasbisa,
P.O. Govardhan, Dist. Mathura, U.P. 281502.
☎: (0565) 81 2195

Sri Chaitanya Saraswat Math, 96 Sevakunj,
Vrindaban, Mathura, U.P. 281121.
☎: (0565) 444024

U.K.

Sri Chaitanya Saraswat Math, 466 Green Street,
London E13 9DB. ☎: (0181) 552 3551
Fax: (0181) 548 9205
e-mail: sbasagar@macline.co.uk

U.S.A.

Sri Chaitanya Saraswat Seva Ashram,
2900 Rodeo Gulch Rd., Soquel, CA 95073.
☎: (408) 288 6360 Fax: (408) 462-9472
e-mail: maharaj@scruznet.com

Sri Chaitanya Saraswat Seva Ashram Mahila Sakha,,
497 North 17th Street, San Jose, CA 95112.
☎: (408) 462 4712 Fax: (408) 688 1652
e-mail: nabadwip@scruznet.com

Sri Chaitanya Saraswat Math,
883 Cooper Landing Rd., Suite 207,
Cherry Hill, NJ 08002.
☎: (609) 962 8888 Fax: (609) 962 0894
e-mail: swamigiri@aol.com

Sri Chaitanya Sanctuary, P.O. Box 1001,
Hilo, Hawaii, HI 96721
☎: (808) 934 9507

Sri Giridhari Ashram, P.O. Box 1238, Keaau, Hawaii, HI 96749.
☎: (808) 968 8896
e-mail: hanuman@gte.net

Sri Chaitanya Sridhar Govinda Mission, RR1 Box 450-D, Crater Rd., Kula, Maui, HI96790. ☎ (808) 878 6821

MÉXICO

Sri Chaitanya Saraswati Sridhar Seva Ashram de México, A.R., Calle 69-B Nº. 537, Fracc. Santa Isabel, Kanasín, Yucatán, c.p. 97370.
☎: (99) 82-84-44 e-mail: ramahari@sureste.com

Sri Chaitanya Saraswati Sridhar Seva Ashram de México, A.R., Reforma Nº 864, Sector Hidalgo, Guadalajara, Jalisco, c.p. 44280.
☎: (3) 826-96-13 e-mail: pitambar@foreigner.class.udg.mx

Sri Chaitanya Saraswat Krishnanushilana Sangha, Alheli 1628, Col Santa Maria, Cd. Guadalupe, Nuevo León c.p. 67160.
☎: (8) 360-41-42

Sri Chaitanya Saraswati Sridhar Seva Ashram de México, A.R.,Garza Garcia, Nuevo León, c.p. 66220.
☎: (8) 356-49-45,
e-mail: ggarcia@mail.cmact.com

Sri Chaitanya Saraswati Sridhar Seva Ashram de México, A.R., Mutualismo 720-C3,, Zona Centro, Tijuana B.C., Baja California, c.p. 22000
☎: (66) 85-76-63
e-mail: jaibalai@telnor.net

Sri Chaitanya Saraswati Sridhar Seva Ashram de México, A.R., 1ro. de Mayo Nº 1057, (entre Iturbide y Azueta), Veracruz, Veracruz, c.p.91700.
☎: (29) 31-30-24
e-mail: madhuchanda@infosel.net.mx

Sri Chaitanya Saraswati Sridhar Seva Ashram de México, A.R., Fernando Villalpando Nº 100, interior 103, Col. Guadalupe Inn., Deleg. Alvaro Obregón, México, D.F., c.p.01020 ☎: (5) 662-2334
e-mail: laksmi92@df1.telmex.net.mx

Sri Chaitanya Saraswati Sridhar Seva Ashram de México, A.R., Calle Loma Florida No 258, Sector Independencia, Col. Lomas Del Valle, Morelia, Michoacán, c.p. 58170

Sri Chaitanya Saraswati Sridhar Seva Ashram de México, A.R., Prolongación de Madero, Sur Nº 33, Fracc. Molino de la Alianza, Orizaba, Veracruz, c.p. 94300
☎: (272) 6-10-74
e-mail: gaurendu@orizaba.rodpas.com.mx

VENEZUELA

Sri Rupanuga Sridhar Ashram, Calle Orinoco, Ramal 2, Quinta No. 16, Colinas de Bello Monte, Caracas.
☎: 752 5265 Fax: 563 9294

ECUADOR

Srila Sridhar Swami Seva Ashram, P.O. Box 17-01-576, Quito.
☎: Quito 342-471 & 408-439
e-mail: rajarama@accessinter.net

BRAZIL

Sri Chaitanya Saraswat Ashram, Rua Tocantins, 111, Vila Jardina, Sorocaba - SP, CEP: 18.044-150
☎ & fax: (015) 227-7116

Sri Chaitanya Saraswat Sridhar Asan,
Rua Mario de Andrade 108,
Caucaia Do Alto-Cotia,
Sao Paulo - Cep. 06720-000.
☎: (011) 792 11253
e-mail:
angelo.hodick@u-netsys.com.br

Srila Govinda Maharaj Seva Ashram,
P.O. Box 92.660, Prata dos Aredes
Teresópolis, Rio De Janeiro,
CEP 25951-970
☎: (21) 644.6695
e-mail:akrishna@terenet.com.br

Sri Chaitanya Saraswat Math,
Rua Bacupa 321 - Jaragua, Belo Horizonte,
Minas Gerais, cep 31270.360

Sri Sri Gaura Nitay Seva Ashram,
Rua Maria Elisa, 143, Jardim California, Barueri, Sao Paulo, cep 06407-090
Fax: 011-7298 2781
e-mail: harigovinda@hotmail.com

Srila Sridhar Govinda Sangha,
Rua Pedro Wayne, 78,
Porto Alegre, RS
CEP 91030 - 480
☎: (051)3417847
e-mail: nityadas@cpovo.net

COLOMBIA

Carrera 11A No. 96-42, Apto 301,
Bogota-8.
☎ 256 9189

IRELAND

Sri Chaitanya Saraswat Sangha,
Rathatton, Hollywood, County Wicklow
☎: (045) 864 766

GERMANY

Sri Chaitanya Saraswat Ashram,
Willibald-Alexis-Str. 20. 10965, Berlin.
☎ & Fax: [49] (30) 6919 320
e-mail: amrita@compuserve.com

RUSSIA

Moscow
Avtozavodskaya D.6. Apt. 24A
☎: 7-095-2750944

Respublika Beloruss (Belorussia),
Minsk 220060,
pr. Schukowa 21 K I kw. 8 (flat 8),
☎: 8-017-2561603

NETHERLANDS

Sri Chaitanya Saraswati Sridhar Ashram,
Middachtenlaan 128,
1333 XV Almere, Buiten.

DENMARK

Sri Chaitanya Saraswat Sangha,
Olivenvej, 49, 6000 Kolding.
☎ & Fax: (45) 7550 3253
e-mail: paragati@post1.tele.dk

HUNGARY

Pajzs utca 18. H—1025 Budapest.
☎: (361) 212 1917/8
Fax: (361) 212 2602

SWEDEN

Sri Chaitanya Saraswat Kendra,
Lundbergsgatan 7b–5V, 21751 Malmo.
☎: (040) 263996
e-mail: adicall@malmo.mail.telia.com

SWITZERLAND

Sri Govinda Kripa Dham,
Alzbachstrasse 9,
CH-5734 Reinach/AG,
SWITZERLAND
☎: (062) 772 06 04
e-mail: sandranand@aol.com

TURKEY

Sri Chaitanya Sridhar Govinda Ashram,
Tahran cad, No: 18/6 K.dere,
ANKARA,
☎: (312) 467 09 35

MAURITIUS

Srila Bhakti Sundar Govinda Ashram,
Sri Chaitanya Saraswat Math
International,
Nabadwip Dham Street.,
Long Mountain.
☎ & Fax: (230) 245 2729,
245 3118, 245 0424
e-mail: govinda@bow.intnet.mu

Sri Sri Nitai Gauranga Mandir,
Near Social Welfare Centre,
Valton Road,
Long Mountain. ☎: 245 2889

Srila Bhakti Sundara Govinda Centre,
Sri Chaitanya Saraswat Math
International,
(Southern Branch),
Royal Road La Flora.
☎: (230) 617-8164 & 617-5726

SOUTH AFRICA

Sri Chaitanya Saraswat Math,
57 Silver Rd.,
New Holmes, Northdale,
Pietermaritzburg, Natal 3201.
☎: (0331) 912 026
Fax: (0331) 947 938
e-mail: jvtech@pmb.lia.net

P.O. Box 60183, Phoenix 4068,
Natal.
☎: (408) 500 1576

Sri Chaitanya Saraswat Math, 2907
Lyster St.,
Ext. 2, Lenasia South, Johannesburg
☎: (011) 852 2158
(Mailing address:) P.O. Box 14988,
Ext 13, Lenasia, Johannesburg

AUSTRALIA

Sri Govinda Dham, P.O. Box 72, Uki,
via Murwillumbah, N.S.W. 2484.
☎: (066) 7955 41
e-mail: dham@mandala.com.au

Sri Chaitanya Saraswat Sridhar Mission,
Lot 2, Beltana Drive, Terranora,
N.S.W. 2486.
☎: (0755) 904422

Sri Chaitanya Saraswat Sridhar Mission,
P.O. Box 1308, Lismore, N.S.W.
2480.
☎: (066) 886169
e-mail: murali@nor.com.au

NEW ZEALAND

Sri Chaitanya Saraswat Sangha,
P.D.C., Waimauku, Auckland.
☎: (09) 411 7022

MALAYSIA

Persatuan Penganut Sri Chaitanya
Saraswat Sadhu Sangam,
Lot No. 224A Jalan Slim Lama,
35900 Tanjung Malim, Perak. ☎: (05)
459 6942

Sri Chaitanya Sridhar Govinda Seva
Ashram,
25 Jalan Burung Garuda, Taman
Bukit Maluri,
52100 Kepong, Kuala Lumpur.
☎ (03) 636 0494

Sri Chaitanya Saraswat Sadhu Sangam,
7 Taman Thye Kim, Jalan Haji
Mohammed Ali,
32000 Sitiawan, Perak. ☎: (05) 691
5830
e-mail: sanji <sanji@tm.net.my>

SINGAPORE

Block 488B-10, N°147, Street 45,
Avenue 9,
Tampines, Singapore 1852. ☎: 786
4701

PHILLIPPINES

Srila Sridhar Swami Seva Ashram,
23 Ruby St., Casimiro Townhouse,
Talon 1, Las Pinas, Metro Manila.
☎: 800-89-31

Sri Chaitanya Saraswat Vaisnava
Society,
Phase 2, Block 8-D, Lot 5 Area 3,
Dagat-dagatan, Malabon, Metro
Manila 1407.
☎: 288 6523

आत्म-सिद्ध-सावलील-पूर्ण-सौख्य-लक्षणं
स्वानुभाव-मत्त-नृत्य-कीर्त्तनात्म-वण्टनम्।
अद्वयैक-लक्ष्य-पूर्ण-तत्त्व-तत्-परात्परं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥